# ॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

## ॥चतुर्थः प्रश्नः॥

## ॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालभते। क्षत्राय राजन्यम्। मरुद्भ्यो वैश्यम्। तपसे शूद्रम्। तमसे तस्करम्। नारकाय वीरहणम्। पाप्मने क्लीबम्। आक्रयायायोगूम्। कामाय पुꣳश्चलूम्। अतिक्रुष्टाय मागधम्॥१॥

गीताय सूतम्। नृत्ताय शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्माय रेभम्। नरिष्ठाये भीमलम्। हसाय कारिम्। आनन्दाय स्त्रीषखम्। प्रमुदे कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय तक्षाणम्॥२॥

श्रमाय कौलालम्। मायायै कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्। शुभे वपम्। शरव्याया इषुकारम्। हेत्यै धन्वकारम्। कर्मणे ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवे मृगयुम्। अन्तकाय श्वनितम्॥३॥

सन्धये जारम्। गेहायोपपतिम्। निर्ऋत्यै परिवित्तम्।

आत्यै परिविविदानम्। अराध्यै दिधिषूपतिम्। पवित्राय भिषजम्। प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्यै पेशस्कारीम्। बलायोपदाम्। वर्णायानूरुधम्॥४॥

नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकाभ्यो नैषादम्। पुरुषव्याघ्राय दुर्मदम्। प्रयुद्भ्य उन्मत्तम्। गन्धर्वाप्सराभ्यो व्रात्यम्। सर्पदेवजनेभ्योऽप्रतिपदम्। अवेभ्यः कितवम्। इर्यताया अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानेभ्यः कण्टककारम्॥५॥

उथ्सादेभ्यः कुब्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वाभ्यः स्रामम्। स्वप्नायान्धम्। अधर्माय बधिरम्। संज्ञानाय स्मरकारीम्। प्रकामोद्यायोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्निनम्। उपशिक्षाया अभिप्रश्निनम्। मर्यादायै प्रश्नविवाकम्॥६॥

ऋत्यै स्तेनहृदयम्। वैरहत्याय पिशुनम्। विवित्त्यै क्षत्तारम्। औपद्रष्टाय सङ्ग्रहीतारम्। बलायानुचरम्। भूम्ने परिष्कन्दम्। प्रियाय प्रियवादिनम्। अरिष्ट्या अश्वसादम्। मेधाय वासः पल्पूलीम्। प्रकामाय रजयित्रीम्॥७॥

भायै दार्वाहारम्। प्रभाया आग्नेन्धम्। नाकस्य

पृष्ठायाभिषेक्तारम्। ब्रध्नस्य विष्टपाय पात्रनिर्णेगम्। देवलोकाय पेशितारम्। मनुष्यलोकाय प्रकरितारम्। सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारम्। अवत्यै वधायोपमन्थितारम्। सुवर्गाय लोकाय भागदुघम्। वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्॥८॥

अर्मेभ्यो हस्तिपम्। जवायाश्वपम्। पुष्ट्यै गोपालम्। तेजसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरायै कीनाशम्। कीलालाय सुराकारम्। भद्राय गृहपम्। श्रेयसे वित्तधम्। अध्यक्षायानुक्षत्तारम्॥९॥

मन्यवेऽयस्तापम्। क्रोधाय निसरम्। शोकायाभिसरम्। उत्कूलविकूलाभ्यां त्रिस्थिनम्। योगाय योक्तारम्। क्षेमाय विमोक्तारम्। वपुषे मानस्कृतम्। शीलायाञ्जनीकारम्। निर्ऋत्यै कोशकारीम्। यमायासूम्॥१०॥

यम्यै यमसूम्। अथर्वभ्योऽवतोकाम्। संवथ्सराय पर्यारिणीम्। परिवथ्सरायाविजाताम्। इदावथ्सरायापस्कद्वरीम्। इद्वथ्सरायातीत्वरीम्। वथ्सराय विजर्जराम्। सर्वन्थ्सराय पलिक्नीम्। वनाय वनपम्। अन्यतोरण्याय

दाव॒पम्॥११॥

सरो॑भ्यो धैव॒रम्। वेश॑न्ताभ्यो॒ दाशम्॑। उ॒प॒स्थाव॑रीभ्यो॒ बैन्दम्॑। न॒ड्व॒लाभ्यः॑ शौष्क॒लम्। पा॒र्या॑य कैव॒र्तम्। अ॒वा॒र्या॑य मार्गा॒रम्। ती॒र्थेभ्य॑ आ॒न्दम्। विष॑मेभ्यो मैना॒लम्। स्वने॑भ्यः॒ पर्ण॑कम्। गुहा॑भ्यः॒ किरा॑तम्। सानु॑भ्यो॒ जम्भ॑कम्। पर्व॑तेभ्यः॒ किम्पू॑रुषम्॥१२॥

प्र॒ति॒श्रुत्का॑या ऋतु॒लम्। घोषा॑य भ॒षम्। अन्ता॑य बहुवा॒दिनम्॑। अ॒न॒न्ताय॒ मूकम्॑। मह॑से वीणावा॒दम्। क्रोशा॑य तूणव॒ध्मम्। आ॒क्र॒न्दाय॑ दुन्दुभ्याघा॒तम्। अ॒व॒र॒स्प॒राय॑ शङ्ख॒ध्मम्। ऋ॒भुभ्यो॑ जिनसन्धा॒यम्। सा॒ध्येभ्य॑श्चर्म॒म्णम्॥१३॥

बी॒भ॒त्सायै॑ पौल्क॒सम्। भूत्यै॑ जागर॒णम्। अभू॑त्यै स्वप॒नम्। तु॒लायै॑ वाणि॒जम्। वर्णा॑य हिरण्यका॒रम्। विश्वे॑भ्यो दे॒वेभ्यः॑ सिध्म॒लम्। प॒श्चा॒द्घो॒षाय॑ ग्ला॒वम्। ऋत्यै॑ जनवा॒दिनम्॑। व्यृ॑द्ध्या अपग॒ल्भम्। स॒ꣳश॒राय॑ प्र॒च्छिदम्॑॥१४॥

हसा॑य पुꣳश्च॒लूमा ल॑भते। वी॒णा॒वा॒दङ्गण॑कङ्गी॒ताय॑। याद॑से शाबु॒ल्याम्। न॒र्माय॑ भद्रव॒तीम्। तू॒ण॒व॒ध्मं ग्रा॑म॒ण्य॑

पाणिसङ्घातन्नृत्तायं। मोदायानुक्रोशकम्। आनन्दायं तलवम्॥१५॥

अक्षराजायं कितवम्। कृतायं सभाविनम्। त्रेतांया आदिनवदर्शम्। द्वापरायं बहिः सदम्। कलये सभास्थाणुम्। दुष्कृतायं चरकाचार्यम्। अध्वने ब्रह्मचारिणम्। पिशाचेभ्यः सैलगम्। पिपासायै गोव्यच्छम्। निर्ऋत्यै गोघातम्। क्षुधे गोविकर्तम्। क्षुत्तृष्णाभ्यान्तम्। यो गां विकृन्तन्तं माꣳसं भिक्षमाण उपतिष्ठते॥१६॥

भूम्यै पीठसर्पिणमा लभते। अग्नयेऽꣳसलम्। वायवे चाण्डालम्। अन्तरिक्षाय वꣳशनर्तिनम्। दिवे खलतिम्। सूर्याय हर्यक्षम्। चन्द्रमसे मिर्मिरम्। नक्षत्रेभ्यः किलासम्। अह्ने शुक्लं पिङ्गलम्। रात्रियै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥१७॥

वाचे पुरुषमा लभते। प्राणमपानव्यानमुदानꣳ समानन्तान् वायवे। सूर्याय चक्षुरा लभते। मनश्चन्द्रमसे। दिग्भ्यः श्रोत्रम्। प्रजापतये पुरुषम्॥१८॥

अथैतानरूपेभ्य आलभते। अतिह्रस्वमतिदीर्घम्। अतिकृशमत्यꣳसलम्। अतिशुक्लमतिकृष्णम्। अतिश्लक्ष्ण-

मतिलोमशम्। अतिकिरिटमतिदन्तुरम्। अतिमिर्मिरमतिमेमिषम्। आशायै जामिम्। प्रतीक्षायै कुमारीम्॥१९॥

ब्रह्मणे गीताय श्रमाय सन्धये नदीभ्य उथ्सादेभ्य ऋत्यै भाया अर्मेभ्यो मन्यवे यम्यै दशदश सरोभ्यो द्वादश प्रतिश्रुत्कायै बीभथ्सायै दशदश हसाय सप्ताक्षराजाय त्रयोदश भूम्यै दश वाचे षडथ नवैकान्नविꣳशतिः॥१९॥

ब्रह्मणे यम्यै नवदश॥१९॥

ब्रह्मणे कुमारीम्॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

This PDF was downloaded from http://stotrasamhita.github.io.
GitHub: http://stotrasamhita.github.io | http://github.com/stotrasamhita
Credits: http://stotrasamhita.github.io/about/